

शिवलती कलियाँ  
विन्दी विभागीय पात्रिका

प्रदूषण विशेषांक

2009-2010

## दो शब्द

### प्रदूषण विशेषांक 2009-10

“खिलती कलियाँ” पत्रिका की रचना, हर छात्र में लेखन-कला को जागृत करने के लिए की जाती है। जिस प्रकार कली के प्रस्फुटन पर फूल के मनमोहक रंगों का आभास होता है। उसी प्रकार आपकी रचनाओं से आपके शक्तिशाली व्यक्तित्व का आभास हो, आप कलियों की भाँति खिलती हुई जग के उपवन को अपनी उज्वल कला से महकाएँ।

स्वायत्तशासी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत “खिलती कलियाँ” पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए विशेष हर्ष हो रहा है। गर्व है कि इसका प्रवर्तन एक से बढ़कर अनेकों के प्रयत्न से संपन्न हुआ। इसमें युवा मस्तिष्कों की उपज ही नहीं, उनकी अभिलाषाओं एवं विचारों का बेजोड़ संगम है। आशा है भविष्य में यह पत्रिका असंख्य सुन्दर कलियाँ विकसित कराएगी।

उन्तीसवाँ संस्करण

2009

#### अनुभूति संस्था के कार्यकारिणी सदस्य

अमिषि पँवार	- अध्यक्ष
आशी सिंह मजीथिया	- उपाध्यक्ष
सोम्या राजन	- महासचिव
हिमानी	- संयुक्त सचिव
सिस्टर किरण, धनश्री	- कोषाध्यक्ष
सुनयना गुप्ता	

उन्तीसवाँ संस्करण

2009-2010

## लो वही हुआ !

लो वही हुआ, जिसका था डर,  
ना रही नदी, ना रही लहर।  
कल तक थी जो जलाशय इधर,  
वो गायब हो गया ना जाने किधर।।

हिलोरें लेती थी हवा जिसे छूके,  
अब बन गया सिर्फ ढेर बदबू के।  
देखकर जिसे मन प्रफुल्लित होता,  
अब देख कीचड़, चैन खोता।।

धरती ने हमें बहुत दिया,  
पर मनुष्य ने क्या किया?  
तुमने प्रकृति को क्या दिया?  
गन्दगी से नष्ट किया, क्या दिया?

केवल 'पोल्यूशन'  
हर घड़ी, हर क्षण'।  
सब ओर सिर्फ 'पोल्यूशन',  
फिर भी भरता नहीं तुम्हारा मन?

07/EC/13  
सुनयना गुप्ता



## आज का सच !!

इस पृथ्वी के प्यारे जीव,  
उनके नष्ट होने का कारण,  
कभी ना सोचा था ईश्वर ने,  
मनुज होंगे कारण।

गोल पाताल पृथ्वी को,  
बनाया गया सात दिनों में,  
समय था विश्राम ईश्वर का,  
लेकिन वह भी छीना गया।

बिछाया शैतान ने अपना जाल,  
जकड़ लिया मनुज को,  
बन गया ईश्वर का प्रिय जीवी,  
शैतान का प्रिय।

मिला न पाए नज़रे मनु,  
जब भगवान ने उठाई नज़रे उन पर,  
छुप गए झाड़ियों के पीछे,  
छुपाने अपनी शरम।

चलो! इसे कहेंगे हम प्रदूषण,  
लेकिन 'आंतरिक',

पहले मानव ने बोया,  
पहला बीज प्रदूषण का।

है मानव प्रदूषित,  
फैलाने लगा सब जग में,  
जल, वायु, धरती, पानी,  
छोड़ा ना किसी को भी।

सुंदर सी धरती,  
है उसमें सुंदर पेड़-पशु,  
बना दिए ऊँची इमारतें,  
नष्ट किया पेड़ों को।

खत्म नहीं हुआ,  
फैलाना प्रदूषण,  
नष्ट किया उसने,  
शुद्ध वायु और जलाशय।

बेचैन था तब तक,  
अब खुद को ही,  
करने लगा प्रदूषित।।

07/EL/62  
मेल्बा जोज



## प्रदूषण

प्रदूषण ने घेरा  
है धरती को  
अपने गंदे हाथ से  
आज नहीं कल नहीं  
सदियों से हैं।

रास्ते से गुज़रना  
है अब मुश्किल  
रास्तों में हैं अब वाहन  
एक नहीं दो नहीं  
पर अधिक से अधिक वाहन  
प्रदूषण को फैलाने वाले वाहन।

कभी न सोचा  
ध्वनि भी है  
प्रदूषण का एक भाग  
नहीं जानते अनेक जीव  
ध्वनि की महिमा  
हैं इसलिए आज वह भी  
प्रदूषण का एक भाग।

मछली जल की रानी है  
जीवन उसका पानी है  
यह है सबका मानना  
किंतु प्रदूषण ने कर लिया  
अपने कक्ष में जल को,  
अब क्या करेगी जल की रानी?  
दुष्ट राक्षस से बचा पाएगी?

07/EL/61  
मेला जोज़



## मन का प्रदूषण

मनुष्य का स्वार्थीपन और अनुचित कार्य  
का परिणाम प्रदूषण वायु, जल, शोर,  
आज की दुनिया का वादविषय।  
सब को हानि और उसका परिणाम,  
भयानक रोगों का धाम  
अशुद्ध जल, स्वच्छहीन, स्थल।  
हानिकारक वर्षा, ओजोन का नाश,  
और यह क्रम चलता रहता हर याम।

07/EL/47  
सायरा सृजन



## प्रदूषण

प्रदूषण मत करो  
कुछ हल देदो।  
प्रदूषण का कारण हम है।  
प्रदूषण हमारी बात है।  
तो प्रदूषण का दरवाजा बंद करो।  
क्रूर है प्रदूषण मनुष्य के लिए  
विश्व रोता है प्रदूषण के कारण  
हमें आँखें खोलनी चाहिए  
रोको प्रदूषण।  
प्रतीक्षा मत करो  
प्रतीक्षा मत करो  
अपनी दुनिया को बचाओ  
बचाओ बचाओ  
कोई नहीं आती, कोई है  
हमारी जिंदगी मलिन हो गया।  
बचाओ बचाओ।

07/EL/63  
लीना एना

## हमारे जीवन के प्रदूषण

एक बार मैं गंगा के तट पर सैर कर रही थी,  
मौसम सुहाना था, लेकिन गंगा परेशान सी थी।  
मैंने पूछा, अपने सौम्य मुख में यह पीड़ा की लकीरें क्यों?  
वह बोली, 'बंधु मैं तुम्हारे लिए चिंतित।  
मैंने आश्चर्य से पूछा, भला ऐसा क्यों?  
वह बोली, "मानव प्रजाती में से दुर्गन्ध आती है  
क्योंकि वह दूषित हो गई हैं।"  
मैं हँस पड़ी और बोली यह तुम कह रही हो?  
कभी खुद को देखा है?  
वह कुछ पल मौन थी और फिर बोली,  
मेरी देह को मैला किसने किया?  
मुझमें जो गंदगी है वह तुम्हारी ही देन है,  
मुझमें जो मैल है वह तो ऊपरी है,  
उसे तो साफ किया जा सकता है लेकिन उस मैल  
का क्या करोगे जो तुम्हारे हृदय और चित्त में घर कर गयी है?

07/EL/66  
के. एच. मोनिका



## प्रदूषण

क्या सामना करना पड़ेगा हमारी नई पीढ़ी को?  
कैसे हम उन्हें धूप में खेलने भेंजे?  
किस भरोसे उन्हें समुद्र की लहरों से खेलने भेंजे?  
किस भरोसे उन्हें गहरी साँस लेने से?  
दूषित कर दिया है हमने अंतरिक्ष सारी।  
ऐसा समय दूर नहीं,  
जब रखना पड़ेगा बच्चों को छिपाकर,  
प्रदूषण के भयानक जाल से।  
यह हमने क्या कर दिया?  
जिस धरती माता की शोध में पले,  
उसे ही मैला कर दिया?  
कैसे समाज की सृष्टि कर रहे हैं हम?  
प्रदूषण ही प्रदूषण छाया है वातावरण में।  
दूर उसे किया जा सकता है,  
किन्तु आंतरिक प्रदूषण को कौन दूर करें?  
लुप्त होती जा रही है मानवता, मानव मन से।  
रहेगा क्या अन्तर मानव और मृग में,  
अगर मानवता ही लुप्त हो गई?  
द्वेष, ईर्ष्या, कोप, दुष्टता, दुरविचार,  
इन सभी से भरा है मानव मन।

आखिर क्यों?  
भगवान ने मानव को प्रेम का पाठ पढ़ाया,  
भाईचारे का पाठ सिखाया।

07/EL/25

शैली



## प्रदूषण

अजब दुनिया के अजब लोग,  
अजब है उनके जीने का रूप।  
खूबसूरत दुनिया का जलवा निराला,  
मगर मानव न समझ सका भोला भाला।

शोषण मानव का आदत बना,  
जितना वह पढ़ लिखकर बड़ा हुआ।  
काटने लगे पेड़ों को,  
न समझ मानव।

धमाकों से किया चूर-चूर  
अपनी माँ की छाती को।  
हिंसा और द्वेष,  
बना जिंदगी का मकसद।

07/EL/10

अखा रहरी



## मानव और धरती

सोने जैसे धरती पर,  
खचाखच भर गये कारखाने।  
जल और वायु से  
सुनहरी माटी हुई काली।

काला है अब मानव का मन,  
पाने की इच्छा बरी।  
हिंसा और द्वेष,  
करते है हम पर अब राज।

07/EL/46

ऐश्वर्या



## प्रदूषण

साँस लेने की कोशिश की  
धूल और धुँआ ने,

मुझे मारने की कोशिश की  
खाँसी को रोकने की कोशिश की  
जान वापस लाने की कोशिश की

पानी में मिले थे रसायन  
जान गयी मेरा जल प्रदूषण से  
आँखें बन्द करके सोचने की कोशिश की

हार्न और कारखानों की ध्वनि ने  
मुझे सोचने नहीं दिया।  
जान गयी मेरी ध्वनि प्रदूषण से।

07/EC/51

जननी. जी.



## कहाँ है शुद्ध वातावरण कहाँ है

### शुद्ध मन

मानव का खोज से  
राज्य-विकास होता है।  
उस समय प्रकृति-परिवर्तन  
बहुत-से बदलाव दूषित बनता है।  
इसलिए अनेक-अनेक  
रोग आते हैं।  
प्रकृति में होते परिवर्तन का  
कारण मनुष्य हैं।

07/EA/32

सुषा रानी



## प्रदूषण हमारी जिन्दगी में :

बढ़ती आबादी, जगह की कमी  
लाते प्रदूषण हमारी जिन्दगी में  
गाडियाँ, ईंधन, रसायन, बिजली उत्पादन  
लाते प्रदूषण हमारी जिन्दगी में  
ऊँची ईमारतें, सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ते  
लड़ते, झगड़ते, निरन्तर भागते  
भरते, कटते, छोटे लोग  
लाते प्रदूषण हमारी जिन्दगी में

07/SC/10

अमिषि पवार



## प्रदूषण

प्रदूषण से मुझे  
लगता है डर,  
इसमें पड़ता है  
मनुष्य के सहन  
पर बुरा अमर  
लेकिन क्या करें?  
प्रदूषण है हर जगह फैला,  
उसकी चपेट में  
मानव बुरा फँसा।

07/SC/07  
स्नेहा आर.



## प्रदूषण

पर्यावरण का खतरा  
जीवजंतुओं का नाशक  
जल, वायु, धरती की शंका  
हमारे जीवन का अप्रिय भाग प्रदूषण

प्रदूषण सिर्फ बाहर नहीं  
बढ़ बसा है हमारे अंदर भी।  
हमारे गीच-विचार में सम्मिलित  
प्रदूषण ने मानवता को भी  
कर दिया दूषित।

मन में कलंक गहकर,  
दुनिया के सामने झूठा प्रदर्शन  
आजकल की दुनिया में खासकर  
यही है जीवन जीने का

एक मूलतत्त्व।  
प्रदूषण अनेक रूप में  
प्रचलित है भीतर और बाहर  
नष्ट कर देगा हमारा जीवन  
इस सच्चाई में है  
धीमा ज़हर।

07/MT/524  
वसुधा



## प्रदूषण

भगवान ने क्या भूमि की रचना की है!  
कितनी सुन्दर प्रकृति हमें दी है।  
पेड़, पर्वत, नदियाँ, पशु, पक्षी  
लाजवाब है ये सभी।

लेकिन मानव, प्रकृति की है श्रेष्ठ प्राणी  
प्रदूषण द्वारा पहुँचा रहा है इसका हानि  
जल, वायु, धरती और शोर प्रदूषण  
देखने को मिलता है हर क्षण

पर प्रदूषण की सीमाएँ सिर्फ वातावरण नहीं  
प्रदूषण फैला है हर इंसान के अंदर भी  
यह प्रदूषण है विचारों का  
मन की ऋणात्मक ख्यालों का

हर किरी वात पर जलने लगना  
तरह तरह के झूठ बोलना  
सहायता माँगने पर इंकार करना  
क्रोध एवं अहं की भावना रखना।

य भी तो प्रदूषण के रूप हैं  
जो समाज में निराशा फैलाने हैं।  
जीवन को गलत दिशा दिखाने हैं।  
उसे रोके बिना कुछ हासिल नहीं हो सकता है।

07/MT/508  
नेहा प्रभु



## प्रदूषण

सारी जगह  
प्रदूषण ही प्रदूषण।  
चारों ओर यही अवस्था।

जल, वायु, धरती  
सब कुछ  
प्रदूषण में डूबे हैं।

मानव मन भी  
प्रदूषण ग्रस्त है।  
श्रमचाचर, हिंसा  
आदि क प्रदूषण है।

इस प्रदूषण के कारण  
अंधकार से भरा है,  
मानव मन।  
कोई भी नहीं  
जो सच्चा है  
और अच्छा है।

घोर अंधकार में  
डूबा हुआ है  
मानव मन  
अंतरिक्ष के प्रदूषण  
से भी है भयानक।

07/SC/22  
मेरीन जोसफ



## प्रदूषण

जंगल में टहलते-टहलते,  
अचानक मुझे एक रोने की आवाज़ सुनाई दी  
इतना दर्द था, इतनी पीड़ा।  
कि मैं उसके ओर खींची चली गई।  
जाकर देखा तो पाया कि  
धरती माँ रो रही थी।  
एक मरे पेड़ को देख-देख  
वेदना से रो रही थी।  
मैंने पास जाकर पूछा  
माँ क्या हुआ, क्या है तुम्हारे इस दुख का कारण?  
गीली आँखों से माँ ने मेरी ओर देखकर कहा  
तुम, तुम मनुष्य हो मेरे दुख का कारण।  
तुम मनुष्यों ने मेरी सुंदर धरती को  
मार डाला।  
पहले यहाँ फूल-कमल खिलते थे  
पर, आज, प्रदूषण के कारण केवल जहरीले रसायन हैं।  
वो मेरी प्यारी नदियाँ  
जो पशु-पक्षियों के लिए अमृत जल थी  
आज तुम्हारे कारण, वही  
उनके लिए विष बन गया।  
लालच, फायदा, अमीरीपन  
इन सब ने तुम्हें अंधा कर दिया  
जागो और देखो तुम्हारी बुरे कर्मों  
का परिणाम।

आज न केवल मेरा वातावरण दूषित है,  
किन्तु तुम्हारा मन भी दूषित है  
तुम मानवता के भावों को  
कई वर्षों पहले छोड़ चुके हो  
और केवल अपने द्वारे में सोचते हो  
जागो और अपने अंदर झाँको  
और अंदर के इस मैल को मिटाकर  
अपने समाज और वातावरण में फैले  
प्रदूषण को मिटाओ।

07/SC/08  
नंदिता नायर



## प्रदूषण

क्या है ये प्रदूषण  
क्या है उसका आकार  
सिर्फ नामों से जानेवाला  
अनेक रूपों में आनेवाला  
ज़रा बता तुम्हारा अनजाम  
जाओ जहाँ अब कभी  
रास्ते पर तू हर कहीं  
भर जाता है तू, हर कोने में  
चुपके-चुपके गंदगी फैलाता है तू।

07/HS/32  
सोमरिता सेनगुप्ता



## प्रदूषण

प्रदूषण न बढ़ाओ  
परंतु उसे मिटाओ  
हमने उसे जगाया है,  
अब हमें ही उसे सुलाना है।  
प्रदूषण एक शाप है  
जो दुनिया को नष्ट कर देगी  
वायु प्रदूषण,  
मृदा प्रदूषण।  
जल प्रदूषण  
यहाँ तक की हमारे मन का प्रदूषण,  
चारों तरफ प्रदूषण ही प्रदूषण  
तो देर किस बात की  
कहीं हम ही न बन जाए,  
बजह उस विनाश की  
प्रकृति को बचाओ  
धरती माँ को न सताओ  
दिल में जो मैल है,  
उसे भी मिटाओ।

07/SC/21  
पल्लवी



## प्रदूषण

हर तरफ धुआँ है, धुआँ कहाँ नहीं,  
साँस लो तब हवा के बदले धुँआ पास आता है।  
कहाँ गये वह दिन, कहाँ गयी वह रातें,  
जब हम क्षण भर बैठ सके,  
साँस ले सके।  
जो हमसे सब करवाता है,

वह और कोई नहीं बल्कि भगवान हैं।  
हम सबको करना है एक चीज़,  
वह हमपर सदा करता है यकीन।

07/EC/31  
नेत्रा



## मानव

मानव, मानव के लिए भी बने शाप  
मानव भी देते जान इस आग में  
परवाह नहीं किसी को इन मासूमों पर  
कहाँ थी हमने मानवता  
भगवान की सुन्दर कला बनी अभिशाप।

07/ZL/44  
माधवी



## हमारा संसार

जब यह इस दुनिया  
बनायी गयी थी  
इतनी साफ स्वच्छ थी  
और अब .....?  
मानव ने सब को गंदा किया।

07/CH/07  
रोशनी रामचंद्रन



## नीला आकाश

यह विशाल नीला आकाश  
कुछ कह जाता था हर बार  
देखती थी मैं इसे हर क्षण  
थी जब बचवी छोटी मैं।  
किये थे मैंने कितने चित्र निकाल  
था अद्भुत उसका हर आकार  
पर आज मुझे नहीं दिखता वह नीलापन  
न बना पाती है मैं उनका चित्र तत्काल  
आती है मुझे लज्जा खुदपर  
मैंने ही किया है इसका यह हाल  
काट दिये हैं वह सुन्दर पेड़  
कर दिया है सारे वातावरण को बेहाल  
चलाते है हम स्कूटर फट-फट  
जला रहे हैं हम अपना ही बचपन।

07/MT/563  
मधुमीता



## प्रदूषण

धरती से आकाश तक,  
जल से अग्नी तक,  
सब का अंतिम कारण,  
प्रदूषण ! प्रदूषण ! प्रदूषण !

07/EL/64  
टी. कृष्णा



## रुपयों का रोग

रुपयों से मानव होता है, धनवान।  
इसके पीछे खो देता है, ज्ञान।  
आज चारों ओर है रूपया,  
सब कुछ करवाता है रूपया।  
जिसके पास आज है रूपया  
उसका होता है, बड़ा ही मान।  
पर कल जो वही धन रूठ गया,  
समझो उसका, सब कुछ लुट गया।  
मेरा आप सबसे यही अनुरोध  
कोई न करे रुपयों का लोभ।  
जिसको लग जाएँ, रुपयों का रोग,  
उसका जीवन, बन जाए शोक।।

07/EL/49  
दिव्या मारिया



## आंतरिक प्रदूषण

अलविदा कहो हर बुरी बात को  
अलविदा कहो हर काली रात को  
हटा दो दिल से नफरत को  
दूर करो मन से वैर भाव को  
हर शिकवे गिले मिटाके आओ  
दिल में प्यार के जला दिये  
न तुम्हारी आँख में पानी हो  
न मेरी आँख में आँसू  
थोड़ा सा तुम हँसो  
और थोड़ा मैं भी हँसूँ  
कुछ इस कदर मिल-जुलकर रहें  
मुश्किलों में न तुम गिरो न मैं गिरूँ।  
जगा लो यह भावना  
और एक उमँग नई  
जोशे-जवानी में।

छोड़ो यह तरंग नई।  
एक नई किरण  
नया उजाला बनो  
सुनहरे भविष्य की  
सुन्दर माला बनो।

07/FA/24  
स्वप्निल



## प्रदूषण

धुआँ धुआँ, बढ़ता शोर प्रदूषित शहर।  
नगर पालिका क्या करे नाले गंदे जो ठहरे।  
मच्छर का प्रकोप है कूड़े कचरे का ढेर।  
मन हो जाता है प्रदूषित आठों पहर।।

देखूँ बंगला गाड़ी मोटर मन ललचाए।  
होते झगड़ा फसाद दिल धबराए।  
व्यस्त जिंदगी, कम वक्त मदद जी चुराएँ।  
मन हो जाता है प्रदूषित आठों पहर।।

07/FA/29  
श्वेता जैन



## मन का प्रदूषण — लालच

धूल, धुएँ से ही  
प्रदूषण नहीं होते,  
ललचाई नज़रें,  
फालतू बातें,  
धेकार की मुलाकतें,  
खुद की नज़रें  
हमारी जिन्दगी को,  
भयंकर रूप से,  
प्रदूषित कर जाते।  
लोग कितने लालची हैं,  
कितनी सारी लम्हें जमा कर रखे,  
कितनी सुविधाओं का अनुभव करते,  
फिर भी,  
कुछ-न-कुछ पाने के लिए  
लालच करते हैं,  
इससे होता है मन - प्रदूषित

07/ZL/22  
जे. श्रुति



## प्रदूषण

प्रदूषण फैला हुआ है  
हर जगह पर।  
कैसे इससे बचे  
मुझे लगता है डर।  
इन्सान की सेहत दिन-बदिन  
बिगड़ती जाती है।

लेकिन अब क्या करे?  
प्रदूषण ही उसका साथी है।  
हवा में, पानी में, वातावरण में  
प्रदूषण बस चुका है।  
बेचारा इन्सान इसकी  
चपेट में फँस चुका है।

07/BT/10  
संजिदा



## नफरत का धुँआ

फैला है चारों ओर काला धुँआ  
गाड़ियों से निकल कर  
जो हवा में जमा हुआ  
किसी को देती खाँसी  
किसी को देता बुखार  
सब को बना देता है बीमार  
इन काली हवाओं पर काबू पा  
सकता है मानव।  
पर क्या अपनी नफरत की आग  
को कभी मिटा सकता है मानव?  
नफरत की इस आग ने मिटा दिए  
जाने कितने घर-बार।  
इन्सान को बना दिया अपने ही भाई  
के खून में भागीदार।

07/ZL/31  
श्रुति गर्ग



## मानसिक प्रदूषण

आधुनिक युग का विकास  
पर प्रदूषण से रचित नहीं  
मनोरंजन का उत्तम साधन  
जो मानव को सतगुण देता  
मानव ने विकास किया  
विकास ने प्रदूषण दिया

विकास ने कम्प्यूटर को दिया  
कम्प्यूटर ने मानसिक प्रदूषण को।।

लुभावने सीरियलों के प्रसारण से  
सीधता है वही देखता है  
करता वही है जो वह सोचता  
जो सोचता वह करता है।

जिसका फल है आज  
आतंकवादी मर्डर क्रोध  
लड़ाई हिंसा भ्रष्टाचार  
अशांति पूरे विश्व में  
न केवल विश्व में  
हम सभी घर में मन में  
भरा है ईर्ष्या घमंड स्वार्थ  
और न जाने किसने प्रकार,  
की बुराइयाँ हैं कैली चारों ओर

07/SC/43

संगीता



## मन का प्रदूषण

है मानव क्या रूप है न्यारा  
कैसे कैसे चेहरे लगाते फिरा  
चाहत की इस अँधी दुनिया में  
भूल गया क्या तेरा क्या मेरा?

है मानव यू देख तो भीतर  
मन खेले यूँ तीतर-तीतर  
लोभ छोड़ अब मानव बनकर  
साकार कर अपना यह जीवन लशकर।

07/FA/27

श्रुति.वी. नायर



## प्रदूषण और हम

नदी तालाबों में जो, कूड़ा देते डाल।  
ठीक नहीं वह आदमी, मना करो तत्काल।।  
प्रकृति सदा देती रही, सबका अच्छा साथ।  
इसे छोड़ गलती कर, स्वयं कटाया हाथ।

07/FA/21

चरिता चोरडिया



## प्रदूषण

प्रकृति! प्रकृति! प्रकृति!  
कैसी है तेरी यह लीला?  
कभी तो करती है तू,  
हमारा पालन-पापण  
और कभी कभी  
ऐसा अनुचित व्यवहार  
आखिर क्यों?

क्या तू नहीं जानती,  
कि तेरे इस एक झटके ने ही,  
ले ली कितनी जाने!  
लुट गया है सब !  
चला गया है सब !  
बेसहारा हो गए है सब!  
आखिर क्यों!

तुझ को हानि पहुँचायी थी किसने ?  
और तूने सजा दी किसको?  
अरे! वह तो एक था।  
यहाँ वो हजारों थे  
आखिर क्यों?

07/FA/12

सोनम



## प्रदूषण

एक प्रश्न खुद से पूछती हूँ  
उत्तर पाने को जूँझती हूँ  
दीवाली कैसे मनाऊँ  
बम पटाखों के शोर में?  
होली कैसे जलाऊँ  
मानव की दूषित सोच में?

वहाँ बम जोर से फटता है  
ध्वनि प्रदूषण करता है  
यहाँ भाइयों में ही ठनी है  
कितनी दूरियाँ बनी हैं।

सर्वत्र भ्रष्टाचार ज्ञात है  
अराजकता का राज है  
यह सोच के मन घबराता है  
और प्रश्न हृदय में आता है  
क्या प्रदूषित केवल हवा, ध्वनि न जल है?  
क्या नहीं दूषित हमारा चरित्र न मन है?

किंतु फिर भी मन में है विश्वास,  
कि फिर से वह दिन आएगा  
जब भाई करेंगे भोजन साथ  
पेड़ों की घनी छाया में  
नहीं लड़ेंगे एक दूजे से  
पड़कर इस मोह माया में।

07/MT/510

इति जैन

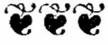


## घटना वर्णन

एक जमाना था, जब कश्मीर सुहाना था  
जब हिमालय पर्वत स्वच्छ था  
जब हरावन हरा-भरा था  
जब पशु-पक्षी जीते-जागते थे  
अब प्रकृति का दृश्य, पहले जैसा न रहा  
कश्मीर भय से भरा है  
हिमालय प्रदूषित हुआ है  
वनों में वृक्ष नहीं  
पशु-पक्षी बेजान हुए है  
इस पर्यावरण प्रदूषण को जड़  
स्वयं मानव बना  
अपने लालच-लोभ के लिए  
प्रवृत्ति माँ को बना दिया पराया।।

07/ZL/52

रीमा सिंघवी



## प्रदूषण

प्रदूषण करती है दुनिया का नाश  
प्रदूषण न सिर्फ दुनिया  
पर करती आकाश का भी नाश  
प्रदूषण जो है शुरू होता है छोटी सी जगह पर,  
पर अब उसकी जगह है सारी दुनिया  
प्रदूषण हवा से मिल चुका  
जिसे हटाना बहुत कठिन  
गाड़ियों की गंदी हवा ही करती है,  
प्रदूषण की शुरुवात,  
प्रदूषण हमारे जीवन की  
आखिरी साँस बन सकती  
ऐसे ही प्रदूषण ही हल चलती रही तो,  
जीना मुश्किल हो जाएगा।

07/ZL/45

के.आर. अमृता

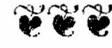


## मन का प्रदूषण

मेरा मन है कितना मैला  
पूरा जीवन इसने खेल है खेला  
मेरे अंदर अंधकार का झोला  
झूल रहा था मन हिंडोला।  
है प्रभु शक्ति दे मुझको  
इसे दूर करूँ मैं कैसे  
दिल में एक जोत जगाऊँ।

07/FA/05

प्राची



## प्रदूषण

पानी पानी सब जहाँ  
पानी यहाँ पानी वहाँ  
पानी हम सबकी जिन्दगी है  
पानी को प्रदूषित करने का मतलब  
हमारे जीवन को प्रदूषण करना जैसे।  
हाव हाव सब जहाँ  
हाव यहाँ हाव वहाँ  
हाव को प्रदूषण मत करो  
हाव हो हमारी जिन्दगी है  
और जिन्दगी नहीं तो हम नहीं।

शोर शोर सब जहाँ  
शोर यहाँ शोर वहाँ  
शोर के बजह से सब परेशान  
शोर है सब की सुनीबत  
शोर को दूर करो हमारी जिन्दगी से।  
प्रदूषण प्रदूषण सब जहाँ  
प्रदूषण यहाँ प्रदूषण वहाँ  
प्रदूषण मत करो  
प्रदूषण इस कुयेल  
प्रदूषण मेक्स थे वर्ल्ड क्राई।

07/EC/38

पी. हेमलता



## प्रदूषण

दिया है विज्ञान ने एक सुखी जीवन  
लिया है उसने वस्तु को जान  
पर इस विज्ञान के बढ़ने से  
खो गया है धरती का मान

जहाँ देखे दूषित हवा  
न ले सकते हैं एक साँस  
कारखानों ने बना दिया है  
आसमान को एक बुज़ादिन माँस

07/EC/47  
मरलीन नीता



## प्रदूषण

प्रदूषण प्रदूषण  
कहाँ है इसका हल।  
हमें देखना है हर जगह।  
लेकिन कोई नहीं ध्यान देता है।  
हमें उसे खत्म करना है।  
हमें उसके खिलाफ लड़ना है।

07/BT/51  
सइदा



## प्रदूषण

हरियाली से खिलती धरती  
अब प्रदूषण से भरी  
पेड़-पौधे सब प्रदूषित  
जल-हवा सब अशुद्ध  
कारण यह कि बढ़ती दुनिया  
संभाल नहीं सकती अपनी जगह  
हरियाली से खिलती धरती  
अब है प्रदूषण से भरी  
आज धरती ही नहीं बल्कि  
मन भी मनुष्य का प्रदूषित है।

07/FA/06  
जननी



## प्रदूषण और हम

सृष्टि ने दी थी खूबसूरत प्रकृति मानव को  
लेकिन नाश किया मानव ने उसका।  
सीखना है मानव को  
प्रकृति से खिलवाड़ न करे,  
सृष्टि के रचयिता का अपमान न करे।  
रिश्वत, कालाबाज़ारी, आपस में लड़ाई  
मानव की इस नीचतम स्वभाव को देखकर

सृष्टि की आँख भर आई।  
प्रकृति ने दिया मानव को भाईचारे का संदेश  
लेकिन लड़पड़े हम धर्म के नाम पर,  
बदल-बदल कर वंश।  
अपमान किया है मानव ने  
अपनी माता का  
भूल गये मानव मूल्यों को,  
रहा केवल मिथ्या अभिमान।

07/FA/31  
लक्ष्मी



## प्रदूषण

सारी जगह छाया है  
विश्व में राज्य जमाया है।  
धरती पे पानी में वायु में,  
अपना रंग दिखाया है।  
उफ! यह प्रदूषण  
मृत्यु बनकर आया है।  
मोटर गाड़ी की भीड़ निराली,  
स्कूटर, मोपेड की है शैली।  
इन सबने मिलकर किया धमाल,  
वातावरण का हुआ बुरा हाल।  
पेड़ों की है शामत आई,  
हुई है जमकर इनकी कटाई  
जन्नत से जहन्नुम बनाया।  
अपनी धरती को ऐसा गवाँया।  
इन सबके बलबूते पर ही,  
टिकी हुई है अपनी धरती।

07/FA/30  
मालिनी मलिक



चलो हम सब प्रण करें  
धरती माँ को स्वच्छ करें  
आओ मिलकर वृक्ष लगाएँ।  
धरती पर हरियाली लाएँ  
गंदगी को हम दूर हटाएँ।  
जहाँ तहाँ कूड़ा न गिराएँ  
सबका जीवन सफल बनाएँ।  
प्रदूषण से मुक्ति पाएँ।  
बहुत सारी गंदगी है समाज में  
इसे सुधारना हम सब का कर्तव्य है।

यह सब गंदगी सबके अंदर है  
अमर हम अपने आप को बदले  
तो यह समाज अपने आप बदल जाएगा।

07/FA/30  
मालिनी मलिक



## प्रदूषण जीवन में

जन्म लेते हैं इस धरती पर,  
साथ लिये अनोखा उज्ज्वल कोमल शरीर,  
मासूमियत की भावनाओं से विमुक्त  
न जाने कब एकता के परदे के पीछे  
मैं और तुम की भावनाएँ घेर के  
भावनाओं को छोड़,  
पैसों की दौड़ में फँस गए।

जन्म लेते हैं इस धरती पर,  
साथ लिये अनोखा उज्ज्वल कोमल शरीर  
धन समाप्त के भाग दौड़ में,  
न जाने कहाँ शिखी रख गए अपने अस्तित्व को,  
बैंक लॉकरों में इकट्ठा किए नोटों से,  
मेहनत की महक नहीं बल्कि  
वेइमानी की बदबू फैलता है।

बुढ़ापा जब छू जाता है  
तब जिंदगी के पथ पर अकेले पड़ जाते है  
एहसास हो जाता है कि कमाई गई पैसों को  
दीमक चाट गई।

देवालयों में शरण लेते हैं  
स्वर्ग के टिकट का मोह मन में लिए।  
यह भूल जाते है कि शरीर इतना  
प्रदूषित हो गया कि प्रायश्चित्त के लिए  
भी स्थान न रहा।

07/EC/35  
कृष्णा



## प्रदूषण

प्रदूषण मत फैलाओ  
इसका हल खताओ  
यह मानव की ही देन है  
जिसमें दुनिया पिस रही हैं।  
हमे अपनी इसे अभी खत्म करना है  
आज मनुष्य का मन भी  
इसका शिकार हुआ है।

काम, क्रोध, मोह, माया  
सबसे भरा हुआ है।

07/BT/46  
फेइथ



## प्रदूषण

गंदगी भरा वातावरण  
जिसमें जी रहे है हम  
जल, वायु, ध्वनि  
जिससे घिरे है हम।  
दूषित हुआ यह वायुमंडल  
किसके कारनामों से?  
दूषित हुए हम  
अपने ही परिणामों से

07/BT/40  
सुनीता



## मन प्रदूषण

है क्या हल  
मन प्रदूषण का?  
क्या क्रांति कोई  
इसे सुधारेगी?  
हमारे युवा आज डूबे हैं  
धूम्रपान, शराब और नशे में  
उनका तन मन प्रदूषण से।  
चलो हम एक बन जाते हैं,  
मन के विज्ञानी, मानव-मन और  
इस दुनिया को स्वच्छ बनाते हैं।

07/EC/37  
निकिता एना



## प्रदूषण

बढ़े एक मेहमान अब, अपने घर जिस साल।  
पाँच पेड़ लगवाइये, तब वह हो खुशहाल।।  
प्राण वायु देते रहे, हरदम सारे पेड़।  
जो सबको ही चाहिए, बूढ़े बाल अधेड़।।  
मिट्टी बह जाए नहीं, ऊँचा बाँधो मेड़।  
पेड़ लगाओ मेड़ पर, उसको कभी न छेड़।।

07/HIS/39  
अरोकिया



## मन का प्रदूषण

प्रदूषण शब्द को सुनते ही हमारे मन में आनेवाली  
नगर, प्रकृति आदि  
क्या जानते है?  
हमारा तन-मन भी प्रदूषित होता है

07/HS/42  
दिविना के.पी.



## कौन है मानव का सच्चा मित्र

एक दिन आया मन में संशय  
कौन है मित्र मानव जीवन में  
क्या धन ही मानव का मित्र है  
जिसके कारण बिगड़ा मानव का चरित्र है  
धन के लोभ में मनुष्य मर रहा है  
धन के लिए जीवन में पाप कर है  
चोरी करके अपने घर में धन भरता है  
धन के लिए दूसरों का जीवन नष्ट कर रहा है  
नहीं धन नहीं हो सकता मानव का मित्र।  
तो क्या मानव का मित्र विज्ञान है  
विज्ञान के कारण मनुष्य कितना महान है  
पर विज्ञान मनुष्य का विनाश भी करता है  
विज्ञान ही तो मनुष्य का नरसंहार करता है  
आखिर कौन है मित्र मानव जीवन में  
सर्वत्र है व्याप्त जो जन-जन में  
सच्चा मित्र तो वही होता है  
खुद दुख सहकर जो सुख देता है  
सहसा मन में आप यह विचार  
कहीं वृक्ष तो नहीं इस पहेली का सार?  
हाँ-हाँ वृक्ष ही तो वह सच्चा है  
जिसके कारण मानव का अस्तित्व है  
वृक्ष के कारण ही मनुष्य की श्वास है।  
वृक्ष मनुष्य को दबा देता है  
बदले में उससे कुछ नहीं लेता है  
खुद वह सहता है जीवन में दर्द  
खुद धूप में वह रहकर मनुष्य को छाया देता है।  
प्रदूषण आदि को खुद में समा लेता है  
वृक्ष ही मानव का सच्चा मित्र है  
उसे मत कहो और प्रदूषण को रोको।

07/EC/39  
थेंकी मैथ्यू



## प्रदूषण

यह प्रदूषण है एक जाल  
जो फैल रहा है हर तरफ  
फँस रहे है इसमें प्राणी  
और प्रकृति हो रही नष्ट  
रोको इसे अभी इसी वक्त  
नहीं तो खो दोगे सब  
खत्म हो जाएगी दुनिया  
और जीवन की बहती धारा  
करो इस प्रकृति से प्रेम  
और लोगों को भी सिखाओ  
कि रखे इसे हरा-भरा  
प्यार करे इसे अपना समझकर  
मन में भी फैल रहा प्रदूषण  
एक दूजे के प्रति घृणा, दोष  
उठ रही मानव के मन में  
तीव्र गति से ये हलचल  
करो मानवता से प्रेम  
यही है इसका संदेश

07/BT/44  
हिमानी



## प्रदूषण

शहरों में घर तो है पर  
सारे रोगों के घर है।  
तन और मन दोनों ही में  
कीटाणुओं का असर है।  
और प्रदूषण से लड़ लड़ हम हारे  
लोभ लालच है बोलबाला है  
पड़ोसी, पड़ोसी का दुश्मन है।  
भाई, भाई में तनाव का नाता है  
बच्चों का बचपन लुप्त हो गया है।  
अश्लीलता का जाल है  
जब तक दिन और दिमाग में।  
बदलाव आयेगा नहीं  
मानव अन्धकार में डूबता जायेगा।

07/EC/32  
मैथिली



## प्रदूषण

हवा जीवन देती है  
गन्दी हवा में साँस लेने से  
कई बीमारियाँ आती हैं।  
यह हवा धूल और धुएँ  
के कारण जटिल हो जाती हैं।  
इसको वायु प्रदूषण कहा जाता है।  
कुआँ, तालाब, नदी, झील आदि  
से पानी मिलना है,  
यदि पानी गंदा हो जाए तो  
वह पीने योग्य नहीं होता है।  
पानी की गन्दगी से  
वातावरण बिगड़ जाता है  
इसे जल-प्रदूषण कहाँ जाता है।  
जो व्यक्ति बुलन्द आवाज़  
करता रहता है, इसके  
सुनने की शक्ति कमज़ोर हो जाती है।  
और धीरे से वह आदमी बहरा हो जाता है।  
इसे ध्वनि प्रदूषण कहते हैं।

07/SC/44  
निखत अंजुम



## प्रदूषण

सुनने में लगता है  
बहुत ही छोटा  
पड़ता है असर उसका  
करता है सबको गंदा  
उसकी शुरुआत होती है  
मनुष्य की फेंकी वस्तु से  
कूड़े नलियों में पड़ते ही  
सड़ जाता है जल्दी से  
आती है बदबू  
वह जाता है हवा में  
पड़ते ही नाकों में  
ढक जाता रुमाल में

कल करखाने है बहुत सारे  
धुँए उठते हैं काले  
चारों ओर फैल जाते  
बन जाते बादल सारे

वायु प्रदूषण तो चला जाता है  
तो इन्सान ज्यादा खतरनाक साबित होता है।

07/SW/525  
किरन हंडा



## प्रदूषण और मानव मन

मन के अच्छे, मन के सच्चे  
वह दिन कहाँ चैन भी कसम से  
मेरी सुंदर दुनिया कभी न थी मैली  
लेकिन मनुष्य ने इसमें खेली प्रदूषण की होली।

आजादी के साथ बड़ी आबादी  
भारत माँ हो गई मैली  
सिन्दबाद के नारे तो लगाए  
लेकिन गंद पड़ी है ताले में, कुएँ में

मन की शांति ढूँढे सभी  
और दुनिया को कोसे मन में ही  
सुनो, पड़े लिखों से लेकर अंगूठे छाप  
मन को साफ रखोगे तो रहेंगी सड़कें साफ।।

07/SC/32  
चंद्रन रवि प्रिया



## प्रदूषण

हमें प्रकृति सभी प्रकार की सुख देती है।  
पर क्या हम इस प्रकृति को  
बचाने के लिए कुछ कर रहे हैं?  
वो व्यक्ति प्राकृतिक वातावरण में रहता है।  
वह इस वातावरण में तन्दुरुस्त रहता है।  
यदि वह प्रकृति से दूर चला जाता है,  
तो अक्सर बीमार पड़ जाता है।  
जीवन बहुत कष्टमय हो जाता है।  
हमें अपने पर्यावरण को प्रदूषण से,  
बचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

07/SC/15  
डेन्सी डेनी



## क्या है प्रदूषण

क्या करती है गंदगी हम में?  
बाहर का प्रदूषण

या मन का प्रदूषण  
मानव ही प्रदूषण बनाता है,  
और उसमें ही लिपट जाता है।  
शोर शराबा, गंदगी,  
क्या यही है प्रदूषण  
या हत्या, चोरी, ठगी है प्रदूषण  
प्रदूषण है हर जगह  
मन में, तन में, दुनिया में।  
है मानव कर साफ अपने आप को  
तभी यह दुनिया साफ हो पाएगी।

07/EC/30  
आशी सिंह मजीथिया



## प्रदूषण

वैज्ञानिक सभ्यता का दुष्परिणाम  
प्रदूषण! प्रदूषण!  
चार प्रकार है पर्यावरण प्रदूषण  
भूमि-वायु-जल और ध्वनि।  
सब के लिए खतरे की घंटी  
जब की कार्बनडाइअक्साइड की वृद्धि  
अगर ऑक्सिजन कम हो जाती  
पिघल जाएँगे हिमखंड।  
जब गर्मी बढ़ जाएगी  
होंगे हम सब रोगग्रस्त  
ओजोन गैस भी रही नहीं असली  
प्रदूषण से हो रही उसकी भी कमी  
कल-कारखानों, मोटरगाड़ियों  
दूषित धुएँ कर रहे प्रदूषित जलवायु  
ध्वनि प्रदूषण से होते हैं लोग  
बहरेपन और मानसिक तनाव के शिकार  
कीटनाशक दवाइयाँ, रसायनिक खादें  
कह रहे भूमि की कोख प्रदूषित  
सर्दी, गर्मी और वर्षा का चक्र  
टूटा सारे जहाँ में।  
कभी बाढ़ तो कभी सूखा,  
कभी ओलावृष्टि तो, कभी तूफान  
झेल रहा है यह मार अब  
हर देश का हर इन्सान।

07/EL/52  
यासिना



## अमानवीयता - प्रदूषण

रोज घटना होती है  
आए दिन लोग मर जाते हैं  
दुःख तो लगता है सबको बड़ा  
दर्द बनकर रह जाता है मन में  
जीना है तो जोग से जिओ  
कभी मुख न मोड़ना  
जीवन है दो क्षण का  
घटना को अप्रिय घटने न देना  
गोली बंदूक से चलती है  
चलाने वाला इन्सान है  
घटना घट जाती है  
भरने वाला इन्सान है।

07/SW/525



## भारत की उन्नति

शिक्षा के माध्यम से  
भारत में हो रहा क्रान्ति  
दिनों दिन प्रगति कर  
बड़े जा रहे हैं भारतवासी  
मनुष्य अपने ज्ञान से  
शिखर पर चढ़ता है  
मन ही मन आविष्कार करता है  
परन्तु कल करखाना खोलता है।  
टी.वी. रेडियो के जरिए  
मिलती हमें रोज खबर  
घर बैठे देख सकते  
टी.वी. के चैनल  
भारत उन्नति में आगे बढ़ रहा है  
लोगों को हर सुख सुविधा प्रदान है  
ऊपर हवाई जहाज उड़ रहे हैं  
नीचे मोटर कार घूम रहे हैं।

07/SW/525



## प्रदूषण

गर्मी का मौसम है  
दो पहर की बेला है  
नदी के किनारे में बैठी हूँ  
आनन्द की साँस ले रही हूँ।  
पूर्व से पश्चिम हवा बह रही है  
कूड़ा कर्कट लेकर आ रही है  
उसी दिशा में मैं बैठी हूँ।  
लाकर मेरे चेहरे पर छोड़ रही है।  
वहाँ न पेड़-पौधे हैं  
कल-कारखाने भरे हैं  
धुएँ की हवा बह रही है  
लोग बिमार पड़ रहे हैं।  
मानव ध्यान में बैठी हूँ  
मन एकाग्र कर रही हूँ  
असहनीय शोर गुल ने  
मेरा मन बेचैन किया है।  
भर गई अहम की भावना  
ईर्ष्या, क्रोध, हिंसा, अपमान  
अवगुणों से भरा मन  
न मिली दिल को चैन।

07/SW/524

कु. फ्रांसिस्का कुजूर

